हिन्दी ग़ज़ल का उद्‌भव एवं विकास : एक संक्षिप्त अध्ययन

डॉ. रामावतार मेघवाल
सहायक आचार्य हिन्दी विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय कोटा

सारांश

हिन्दी ग़ज़ल हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। इसने हमारे साहित्य को समृद्ध किया है। हिन्दी गजल के उद्‌गम को लेकर भी विद्वानों में दो स्पष्ट मत दिखाई देते हैं। प्रथम यह कि हिन्दी गजल का उद्‌भव हिन्दी के उद्‌भव अर्थात् आदिकाल के साथ ही दिखलाई पड़ता है। आदिकाल में हिन्दी के उत्थान के साथ–साथ हिन्दी गजल परंम्परा को अमीर खुसरों से जोड़ना अनर्थक नहीं है। अमीर खुसरों मुसलमान (सूफी) थे इसलिए गजल के छन्द शास्त्र की जानकारी उन्हें थी और उस समय तक हिन्दूस्तान में उर्दू का जन्म नहीं हुआ था इसीलिए उन्होने हिन्दी में अपनी अभिव्यक्ति की। विद्वानों ने अमीर खुसरो की ऐसी गजल भी खोज निकाली है जिसका एक मिसरा फारसी और दूसरा मिसरा हिन्दी भाषा का है। रही बात परपरा की तो अमीर खुसरा के बाद कबीर का नाम आता है. जिनका लालन– मालन भी मुस्लिम परिवार में हुआ था। कबीर के समय तक भी हिन्दी भाषा में अरबी फारसी के शब्दों का प्रयोग होने लगा था लेकिन उर्दू का अस्तित्व नहीं था। इसलिए हिन्दी गजल का उद्‌भव आदिकाल से मानने और उसकी विकास परंपरा अमीर खुसरो से मानने में कोई हर्ज नहीं है।

कुंजी शब्द :– ग़ज़ल, परंपरा, हिन्दी, उर्दू, आरबी, फारसी।

भूमिका :–

साहित्य भाषा से अधिक भावों का संवेदनाओं का विषय है भाषा चाहे जो भी हो, जैसी भी हो, साहित्य सीमाओं के बंधन तोड़ पूरे विश्व की धरोहर बन जाता है। किसी भी भाषा की श्रेष्ठ रचनाएँ भाषाई काराओं को लाँघ कर, राष्ट्र की सीमाओं का उल्लघंन करके भी पढ़ी जाती रही है। भाषाई दुरूहता उसे जरूर आम आदमी के नजदीक आने में गतिरोध उत्पन्न हो लेकिन अनुवाद, भाषानुवाद, लिप्यानुवाद के माध्यम से ही सही पर कालजयी साहित्य सभी सीमाओं से परे होकर पढ़ा जाता है, पढ़ा जाता रहेगा, यह सत्य है। लेकिन इतना ही सच यह भी है कि मानव का अन्वेषी मन सदा ही तथ्यों का विवेचन–विश्लेषण करता रहता है। उनका उद्‌गम विकास तलाशता रहता है। उन तथ्यों का मानवोपयोगी महत्त्व प्रकट कर आने वाले संसार को सुन्दर रंग देना चाहता है। वो अपनी जमीन तलाशना चाहता है, वो अपना आसमां खोजना चाहता है। कभी किसी परंपरा से जोड़कर वो उन तथ्यों का अनुसंधान करता हैय तो कभी परंपरा से तोड़ उन्हें नये आकार देता है। आज हिन्दी गजल भी इसका अपवाद नहीं है। भले ही वो अरबी–फारसी की सीमाओं को तोडकर आज भारतीय जन–मानस में रच–बस गई हो, लेकिन आलोचकों, सुधि विद्वानों एवं अध्येताओं ने हिन्दी गजल के उद्‌गम एवं विकास को भी तलाशने का कार्य किया है। हिन्दी गजल के उद्‌गम को लेकर भी विद्वानों में दो स्पष्ट मत दिखाई देते हैं। प्रथम यह कि हिन्दी गजल का उद्‌भव हिन्दी के उद्‌भव अर्थात् आदिकाल के साथ ही दिखलाई पड़ता है। आदिकाल के प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो को हिन्दी का पहला ग़ज़लकार स्वीकार करते हुए उदाहरण के तौर पर उनकी रचना को प्रस्तुत करते हैं –

जब यार देखा नैन भर दिल की गई चिंता उतर

ऐसा नहीं कोई अजब, राखे उसे समझाय कर

अब आँख से औझल भया, तड़पन लगा मेरा जिया

हक्का इलाही क्या किया आँसू चले भर लाय डर

तू तो हमारा यार है, तुझ पर हमारा प्यार ळे

तुझ दोस्ती बिसियार है इक शब मिलो तुम आय कर

खुसरो कहे बातें गजब दिल में न लाए कुछ अजब

कुदरत खुदा की है अजब जब जिय दिया गुलश्लायकर।[1]

इसके साथ ही दूसरा मत यह भी है कि जो हिन्दी गजल का उद्‌भव आधुनिक काल से ही समझते है। उनका तर्क है कि कोई भी परम्परा अपने उद्‌भव के साथ ही समाप्त नहीं हो जाती। अमीर खुसरो में हिन्दी गजल का उद्‌भव तलाशते है तो अमीर खुसरो के डेढ़ सौ साल बाद कबीर का नाम आता है और कबीर के लगभग 500 वर्षों बाद भारतेन्दु का नाम हिन्दी गजल की विकास परंपरा में लिया जाता है। इनके बीच की शताब्दियों में यह परंपरा कहीं दिखाई नहीं देती। अपनी पुस्तक षहिन्दी गजल दशा और दिशा में डॉ. नरेश निसार लिखते है कि– साहित्य के शोधार्थियो में यह प्रवृत्ति आम देखी जाती है वे जिस विषय पर काम करते है तो सबसे पहले उसकी प्राचीनता सिद्ध करने में लग जाते है।[2]

लेकिन यहाँ यह दृष्टव्य यह है कि आदिकाल में हिन्दी के उत्थान के साथ–साथ हिन्दी गजल परंम्परा को अमीर खुसरों से जोड़ना अनर्थक नहीं है। अमीर खुसरों मुसलमान (सूफी) थे इसलिए गजल के छन्द शास्त्र की जानकारी उन्हें थी और उस समय तक हिन्दूस्तान में उर्दू का जन्म नहीं हुआ था इसीलिए उन्होने हिन्दी में अपनी अभिव्यक्ति की। विद्वानों ने अमीर खुसरो की ऐसी गजल भी खोज निकाली है जिसका एक मिसरा फारसी और दूसरा मिसरा हिन्दी भाषा का है। रही बात परपरा की तो अमीर खुसरा के बाद कबीर का नाम आता है. जिनका लालन– मालन भी मुस्लिम परिवार में हुआ था। कबीर के समय तक भी हिन्दी भाषा में अरबी फारसी के शब्दों का प्रयोग होने लगा था लेकिन उर्दू का अस्तित्व नहीं था। इसलिए हिन्दी गजल का उद्‌भव आदिकाल से मानने और उसकी विकास परंपरा अमीर खुसरो से मानने में कोई हर्ज नहीं है।

हिन्दी गजल परंपरा के अलावा मुकरियों की लेखन परंपरा में भी अमीर खुसरो के बाद सीधे ही भारतेन्दु का नाम आता है, तो क्या मुकरियों का उद्‌भव विकास भी आधुनिक काल से मान लिया जाए जबकि सर्वविदित है कि मुकरिया भी अमीर खुसरो ने हिन्दी में सबसे पहले लिखी है। ध्यातव्य है कि मुकरिया भी फारसी का एक छन्द है। मध्यकाल में हुए गजल के विकास को भी हमनें उर्दू परंपरा से जोड़ दिया जबकि उर्दू परंपरा के गजलकारों के भी कई शेश्र ऐसे है, जिनमें हमें खड़ी बोली के दर्शन हो जाते है। उन्हें भी हिन्दी गजल परंपरा से जोड़कर देखा जा सकता था। बहरहाल ऐसा क्यों नहीं हुआ यह शोध का विषय है। जहाँ तक भाषा का प्रश्न है हिन्दी–उर्दू के बीच विभाजक रेखा खींचना नामुमकिन नहीं तो मुश्किल जरूर है इसलिए हिन्दी गजल की विकास परंपरा को अमीर खुसरो से ही मानना समीचीन होगा। अपनी पुस्तक शामयाने काँच के में इसी बात को स्पष्ट करते हुए डॉ. कुँवर बेचौन लिखते है– हिन्दी गजल की विकास यात्रा अमीर खुसरो से आरंभ करना अधिक उपयोगी होगा। क्योंकि उसी युग में हिन्दी के अपने प्रारंभिक रुप में गजलें लिखी गयी।

तुगलक दरबार में राजकवि खुसरो ने हिन्दुस्तान में गजल की बुनियाद रखी। तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में सूफी संत ख्वाजा मुईनुद्दीन भी फारसी और हिन्दी में गजल लिखना शुरु कर चुके थे।[3]

हिन्दी के साथ साथ गजल अन्य भारतीय भाषाओं में भी आयी। पंजाबी, मराठी, गुजराती, बांग्ला, डोंगरी, सिंधी आदि भाषाओं में भी गजलें लिखी गयी, पर हिन्दी में इसकी समृद्ध एवं विकसित परंपरा दिखलाई देती है। डॉ. सुमेर सिंह श्शैलेष ने हिन्दी में विकसित होती गजल परंपरा के विषय में ठीक ही लिखा है कि –हिन्दी के रचनाकारों ने इस विदेशी काव्य पौधे को अपनी धरती पर रोपा तथा भारत के पानी से सीचकर अधिक पानीदार और असरदार बनाने में साझेदारी की।[4]

हिन्दी मजल की विकास परंपरा को उल्लेखित करते हुए आरोह (गजल अंक) के पृष्ट 28 पर श्री रतीलाल शाहीन लिखते है हिन्दी में अमीर खुरत्रो, कबीर, बहादुर शाह जफर, भारतेन्दु हरिश चन्द्र, बद्री नारायण उपाध्याय, चौधरी प्रेमधन, प्रताप नारायण मिश्र, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही, मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी शनिरालाश आदि प्राचीन कवियों ने भी गजल विधा में अपने अपने तरीके से आजमाईश की है।[5]

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि लगभग सभी साहित्यकार हिन्दी गजल का उद्भव अमीर खुसरो से मानते है, साथ में यह भी स्वीकार करते है कि व्यवस्थित रुप हिन्दी में गजलें आधुनिक काल में कही जाने लगी। कोई छायावादी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी शनिरालाश के 'बेला' काव्य संग्रह से तो कोई सुधि समीक्षक जयशंकर प्रसाद से हिन्दी गजल लेखन की परंपरा को स्वीकार करते है। इसलिए बिना किसी विवाद में पड़े यह मानना ही उचित होगा कि जिस प्रकार अमीर खुसरो ने मुकरिया लिखी वैसे ही हिन्दी में गजलें भी लिखी किन्तु मुगलों के साम्राज्य स्थापित करने के बाद यह परंपरा व्यवस्थित रुप नहीं ले सकी, हालांकि इस दौरान भी कई उर्दू गजलकारों ने कई शेर ऐसे लिखे जिन्हें हिन्दी का माना जा सकता है. इसलिए अमीर खुसरो से प्रारंभ हुई यह गजल गंगा मध्यकाल में अंतः सलिला होकर बही और उचित अवसर पाकर फिर से मुखर होकर प्रवाहमान हो गयी।

मध्यकाल की गजलों में भारतीयता को तलाश करने की दिशा में एक सराहनीय एवं महत्त्वपूर्ण प्रयास डॉ. बानो सरताज ने किया। उन्होंने अपने शोध–ग्रंथ उर्दू शायरी में भारतीयता में मध्यकालीन शायरी में भारतीयता के ऐसे तत्वों को खोज निकाला है जिससे यह स्पष्ट प्रमाणित हो जाता है कि अमीर खुसरो से प्रारम्भ हुई हिन्दी गजल की यह परंपरा मध्यकाल में भी यथावत चलती रही थी। अपने इस शोध ग्रंथ में उन्होंने भारत विभिन्न धर्मों की संगम स्थली, श्रद्धेय व्यक्तियों का भारत, भारत के पहाड़ध्नदियों, भारत के नगर, ऐतिहासिक धरोहर, भारत के त्यौहार, कृषि प्रधान भारत देश, भारत की वन संपदा और भारतीय संगीत जैसे विषयों में मध्यकालीन शायरी में अभिव्यक्त ऐसी पंक्तियों को खोज निकाला है. जिसमें भारतीय मौसम, फल–फूल. पशु–पक्षी. तीज–त्यौहार, रीति–रिवाज और भारतीय सामाजिक जीवन के चित्र यहाँ–वहाँ बिखरे पड़े हैं। अपने इस शोध–प्रबंध में डॉ. बानो सरताज लिखती हैं नजीर अकबराबादी ने हिन्दू अवतारों. मेला–त्यौहारों. होली–दिवाली–राखी, बाँसुरी, बरसात का ऐसा क्रम पेश किया है जिसमें सिर्फ और सिर्फ हिन्दुस्तान की मिट्टी की गंध बसी है।[6]

निष्कर्ष :– निश्चय ही सारांश में कहा जा सकता है कि हिन्दी गजल का उद्भव 14वीं शतांब्दी में भारतीय सरजमी पर हुआ और सूफी संत अमीर खुसरो को हिन्दी गजल का प्रणेता माना जाना उचित है। अमीर खुसरो की ऐसी भी गजलें प्राप्त हुई है जिसका एक मिसरा फरसी तथा दूसरा मिसरा हिन्दी में है। कबीरदास से हिन्दी गजल की एक व्यवस्थित परंपरा दिखलाई देती है जो भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल से होती हुई आज तक दिखलाई पड़ती है।

संदर्भ :

1. अमीर खुसरो और उनकी हिन्दी रचनाएँ, डॉ. भोलानाथ तिवारी पृ.सं. 122
2. हिन्दी गजल दशा और दिशा, डॉ. नरेश शनिसारश, पृ.सं. 40
3. शामियाने काँच के, डॉ. कुँअर बैचेन, पृ.सं. 8
4. हिन्दी गजल का विवेचनात्मक अनुशीलन डॉ. सुमेर सिंह श्शैलेषश, पृ.सं. 47
5. आरोह गजल अंक, पृ.सं. 28
6. उर्दू शायरी में भारतीयता, डॉ. बानो सरताज, पृ.सं. 100